Gyansindhu Coaching Classes | Join – Whatsapp Channel By Link | Subscribe for Live Class

कक्षा 10 – हिंदी

महामैराथन क्लास

जीवन परिचय+30 MCQ+गद्यांश+पद्यांश

आचार्य रामचंद्र शुक्ल

संक्षिप्त-परिचय

- **जन्म**– 1884 ई०
- **जन्म स्थान**– बस्ती जिले के अगोना ग्राम में।
- **पिता** – चन्द्रबली शुक्ल
- **शिक्षा**– एफ. ए. (इण्टरमीडिएट)
- **आजीविका**– अध्यापन, लेखन
- **भाषा**– शुद्ध साहित्यिक, सरल एवं व्यावहारिक भाषा
- **शैली**– वर्णनात्मक, आलोचनात्मक, भावात्मक तथा हास्य-व्यंगात्मक।
- **मृत्यु**– 1941 ई०
- **कृतियाँ**– चिन्तामणि, रसमीमांसा, त्रिवेणी, हिन्दी साहित्य का इतिहास, तुलसी ग्रन्थावली, जायसी ग्रन्थावली, हिन्दी-शब्द सागर

जीवन-परिचय- प्रसिद्ध आलोचक, निबंधकार एवं साहित्यकार इतिहासकार आचार्य रामचंद्र शुक्ल जी का जन्म सन् **1884** ई० में बस्ती जिले के अगोना नामक ग्राम में हुआ था। पिता का नाम चंद्रबली शुक्ल था। आचार्य रामचंन्द्र शुक्ल जी ने हाई स्कूल की परीक्षा मिशन स्कूल मिर्जापुर से उत्तीर्ण की तथा इंटरमीडिएट की परीक्षा अंतिम वर्ष में ही छूट गई थी।

शुक्ल जी ने मिर्जापुर के न्यायालय में नौकरी कर ली किन्तु किसी कारण से छोड़ दी। बाद में मिर्जापुर के मिशन स्कूल में चित्रकला के अध्यापक हो गए। स्वाध्याय से इन्होंने हिंदी अंग्रेजी सस्कृत बंगला आदि भाषाओं का अच्छा ज्ञान प्राप्त कर लिया। पत्र-पत्रिकाओं में लिखना आरंभ कर दिया। बाद में इनकी नियुक्ति काशी हिंदू विश्वविद्यालय में हिंदी के प्राध्यापक पद पर हो गई। बाबू श्यामसुंदर दास के पश्चात आचार्य रामचंद्र शुक्ल जी हिन्दी विभाग के अध्यक्ष बने। इसी पर पर कार्य करते हुए सन **1941** ई० में हिंदी साहित्य का यह आलोचक पंचतत्व में लीन हो गया।

कृतित्व- आचार्य रामचंद्र शुक्ल मूर्धन्य आलोचक, श्रेष्ठ निबंधकार, निष्पक्ष इतिहासकार महान शैलीकार एवं युग प्रवर्तन आचार्य थे। इन्होने अनेक आलोचनाएँ लिखी इनकी विद्वता के कारण ही ‘हिन्दी शब्द सागर’ के

संपादन कार्य में सहयोग के लिए इन्हें बुलाया गया। आलोचना इनका मुख्य एवं प्रिय विषय था। हिन्दी साहित्य का इतिहास लिख कर इतिहास लेखन की परम्परा का सूत्रपात किया।

- **निबंध संग्रह**– चिंतामणि भाग 1 और 2, विचारवीथी
- **इतिहास ग्रंथ**– हिंदी साहित्य का इतिहास
- **आलोचना ग्रंथ**– सूरदास, रस मीमांसा, त्रिवेणी संपादन कार्य जायसी, ग्रन्थावली, तुलसी ग्रंथावली, भ्रमरगीत सार, हिन्दी शब्द सागर, काशी नागरी प्रचारिणी पत्रिका, आनंद कादंबिनी।
- **कहानी**– ग्यारह वर्ष का समय
- **काव्य कृति**–अभिमन्यु वध
- **अन्यकृतियाँ**–मेगास्थनीज का भारतवर्षीय विवरण, आदर्श जीवन, कल्याण का आनंद, विश्व प्रबंध, बुद्धचरित (काव्य) आदि प्रमुख हैं।

जयशंकर प्रसाद

संक्षिप्त परिचय

- **जन्म**– 30 जनवरी 1889
- **जन्म स्थान**– काशी (उत्तर प्रदेश)
- **पिता** – देवी प्रसाद
- **भाषा**– शुद्ध साहित्यिक खड़ीबोली
- **शैली**– समीक्षात्मक, भावात्मक, व्यंग्यात्मक शैली
- **मृत्यु**– सन् 1937 ई०
- **प्रमुख कृतियाँ**– चन्द्रगुप्त, स्कन्दगुप्त, तितली, इन्द्रजाल,

जीवन–परिचय–

छायावाद के कवि चतुष्ट्य में अग्रणी महाकवि जयशंकर प्रसाद का जन्म् 30 जनवरी सन् 1889 ई० में काशी के प्रसिद्ध 'सुँघनी साहू' नामक परिवार में हुआ था। जयशंकर प्रसाद जी के पिता श्री देवी प्रसाद और पितामह श्री शिवरत्न साहू' थे। इनके बड़े भाई का नाम शंभूनाथ था।

इनके माता-पिता के मृत्यु के बाद शंभू जी ने ही इनकी पढ़ाई का प्रबंध किया। सर्वप्रथम क्वींस कॉलेज में प्रवेश लिया इनका मन वहाँ नहीं लगा तो घर पर ही अंग्रेजी और संस्कृत का अध्ययन करने लगे।

प्रसाद जी 17 वर्ष के थे तभी शंभूनाथ जी की मृत्यु हो गई। इन्होने तीन शादियाँ की और तीनों ही पत्नियों की असमय में मृत्यु हो गई। थोड़े दिनों बाद उनके छोटे भाई की भी मृत्यु हो गई जिस कारण प्रसाद जी अंदर ही अंदर टूट गए। इसी दुःख में डूबे हुए क्षय-रोग से ग्रस्त होकर सन् 1937 ई० में पंचतत्व में विलीन हो गए।

प्रमुख रचनाएँ- प्रसाद जी बहुमुखी प्रतिभा के धनी कवि थे। इनकी कृतियाँ निम्नलिखित हैं-

- चन्द्रगुप्त
- स्कन्दगुप्त
- कंकाल
- तितली
- इरावती (अपूर्ण)
- आँधी
- आकाशद्वीप
- इन्द्रजाल
- अजातशत्रु
- आकाशदीप
- झरना
- लहर
- आँसू
- कामायनी
- झरना

Gyansindhu Coaching Classes | Join – Whatsapp Channel By Link | Subscribe for Live Class

सूरदास

संक्षिप्त परिचय

- **जन्म**– सन् 1478 ई०।
- **जन्म स्थान**– रूनकता।
- **पिता** – रामदास सारस्वत।
- **प्रमुख रचनाएँ**– सूरसागर, साहित्य लहरी, सूर सारावली।
- **भाषा**– ब्रज।
- **शैली**– मुक्तक शैली के गेयपद।
- **विशेष**– अष्टछाप के जहाज एवं भक्तिकाल के कवि
- **मृत्यु**– सन् 1583 ई०।
- **साहित्य में स्थान**– कृष्णभक्त कवियों में सर्वोच्च स्थान तथा वात्सल्य रस के पुरोधा।

Gyansindhu Coaching Classes
Join – Whatsapp Channel By Link
Subscribe for Live Class

जीवन–परिचय–

महाकवि सूरदास का जन्म 'रूनकता' नामक ग्राम में सन् 1478 ई० में पं० रामदास के घर मे हुआ था। पं० रामदास सारस्वत ब्राह्मण थे। कुछ विद्वान् 'सीही' नामक स्थान को सूरदास का जन्मस्थल मानते हैं।

सूरदासजी जन्मान्ध थे या नहीं, इस सम्बन्ध में भी अनेक मत हैं। कुछ लोगों का कहना है कि बाल मनोवृत्तियों एवं मानव–स्वभाव का जैसा सूक्ष्म और सुन्दर वर्णन सूरदास ने किया है, वैसा कोई जन्मान्ध व्यक्ति कर ही नहीं सकता, इसलिए ऐसा प्रतीत होता है कि वे सम्भवतः बाद में अन्धे हुए होंगे।

सूरदास जी श्री वल्लभाचार्य के शिष्य थे। वे मथुरा के गऊघाट पर श्रीनाथ जी के मन्दिर में रहते थे। सूरदास का विवाह भी हुआ था। विरक्त होने से पहले वे अपने परिवार के साथ ही रहा करते थे। पहले वे दीनता के पद गाया करते थे, किन्तु वल्लभाचार्य जी के सम्पर्क में आने के बाद वे कृष्णलीला का गान करने लगे। कहा जाता है कि एक बार मथुरा में सूरदासजी से तुलसी की भेंद हुई थी और धीरे–धीरे दोनों में प्रेम–भाव बढ़ गया था। सूर से प्रभावित होकर ही तुलसीदास ने 'कृष्णगीतावली' की रचना की थी। सूरदाजी की मृत्यु सन् 1583 ई० में गोवर्धन के पास' पारसौली' नामक ग्राम में हुई थी। मृत्यु के समय महाप्रभु वल्लभाचार्य के सुपुत्र विठ्ठलनाथजी वहाँ उपस्थित थे।

प्रमुख रचनाएँ– कृष्ण भक्ति काव्यधारा के भक्त शिरोमणि सूरदास ने लगभग सवा लाख पदों की रचना की थी। 'काशी नागरी प्रचारिणी सभा' की खोज तथा पुस्तकालय में सुरक्षित नामावली के अनुसार सूरदास के ग्रन्थों की संख्या 25 मानी जाती है, किन्तु उनके तीन ग्रन्थ ही उपलब्ध हुए हैं–

1. **सूरसागर** 2. **सूरसारावली** 3. **साहित्य-लहरी**

Gyansindhu Coaching Classes
Join – Whatsapp Channel By Link
Subscribe for Live Class

तुलसीदास

संक्षिप्त परिचय

- **जन्म**– संवत् 1554 वि० (सन् 1532 ई०)
- **जन्म स्थान**– राजापुर गाँव (चित्रकूट)
- **पिता** – आत्माराम दुबे
- **माता**– हुलसी
- **बचपन का नाम**– रामबोला
- **भाषा**– अवधी तथा ब्रज
- **शैली**– छप्पय, दोहा, चौपाई, कवित, सवैया, आदि।
- **मृत्यु**– संवत् 1680 वि० (सन् 1623 ई०)
- **प्रमुख कृतियाँ**– रामचरितमानस, जानकी, मंगल, दोहावली, गीतावली, पार्वती मंगल, रामलला–नहछू, रामाज्ञा प्रश्न आदि।

जीवन-परिचय-

तुलसीदास जी के जन्म व स्थान के विषय में विद्वानों में मतभेद हैं। मूल गोसाईं चरित एवं तुलसी-चरित में इनका जन्मस्थान राजापुर बताया गया है। अन्य कुछ विद्वान 'सोरों' नामक स्थान पर जन्में बताते हैं। आचार्य शुक्ल के अनुसाार भी इनका जन्म राजापुर में ही माना जाता है। जन्म संवत् 1554 वि० (सन् 1532 ई०) में बताया जाता है, और यही सर्वाधिक प्रचलित है।

पिता का नाम आत्माराम दुबे और माता का नाम हुलसी था। जन्म के सम्बन्ध में एक दोहा प्रचलित है-

"पन्द्रह सौ चौवन विसे, कालिन्दी के तीर।
श्रावण शुक्ला सप्तमी, तुलसी धर्‌यो शरीर।।"

बचपन का नाम 'रामबोला' था। जन्मे तो दाँत भी थे और मुँह से राम निकला था। राक्षस समझकर इनके पिता ने त्याग दिया तो एक दासी ने इनको पाला तथा बाबा नरहरिदास ने अपना शिष्य बनाया। इनका विवाह रत्नावली से हुआ था परन्तु उससे विरक्त हो गए। काशी में शेष सनातन से वेद-वेदांगों की शिक्षा ली। फिर राम के चरित्र का गायन करने लगे और रामचरित मानस की रचना की। इनका समय काशी, अयोध्या और चित्रकूट में बीता। मृत्यु के सम्बन्ध में भी एक दोहा प्रसिद्ध है-

"संवत् सोलह सौ असी, असी गंग के तीर।
श्रावण शुक्ला तीज सनि, तुलसी तज्यो शरीर।।"

प्रमुख कृतियाँ- तुलसी दास जी की 12 प्रामाणिक रचनाएँ मानी जाती है-

1. पार्वती मंगल
2. जानकी मंगल
3. वैराग्य संदीपनी
4. बरवै रामायण
5. रामाज्ञा प्रश्न
6. कवितावली
7. कृष्ण गीतावली
8. गीतावली
9. रामचरित मानस
10. दोहावली
11. विनय पत्रिका
12. रामलला नहछू

MCQ

1. 'अनन्त प्रकाश' के लेखक हैं:

A. जयप्रकाश भारती

B. रामकुमार वर्मा

C. धर्मवीर भारती

D. रांगेय राघव

2. निम्नलिखित में संस्मरण लेखक हैं

A. महादेवी वर्मा

B. डॉ० नगेन्द्र

C. जयशंकर प्रसाद

D. धर्मवीर भारती

3. गागर में सागर भरना' सूक्ति किस कवि के लिए प्रसिद्ध है :

A. कबीर के लिए
B. सूरदास के लिए
C. तुलसीदास के लिए
D. बिहारी के लिए

ज्ञानम् मनुष्यस्य तृतीय नेत्रम्

4. 'दीप शिखा' रचना है:

A. पन्त की

B. महादेवी वर्मा की

C. जयशंकर प्रसाद की

D. निराला की

ज्ञानसिन्धु कोचिंग क्लासेज
अनुशासनेन विद्या अभ्यासेन विद्या
ज्ञानात् मुक्तिः
।। ज्ञानम् मनुष्यस्य तृतीय नेत्रम् ।।

5. प्रेम-वाटिका' के लेखक हैं:

A. रसखान

B. मतिराम

C. केशव

D. भूषण

6. 'नर से नारायण' के लेखक हैं:

A. गुलाबराय
B. यशपाल
C. जैनेन्द्र
D. अज्ञेय

7. पथ के साथी' किस विधा की रचना है:

A. डायरी

B. संस्मरण

C. निबन्ध

D. नाटक

8. प्रलय सृजन, जीवन के गान, विन्ध्य हिमालय तथा हिल्लोल किसकी रचना है?
   A. भवानीप्रसाद मिश्र
   B. केदारनाथ अग्रवाल
   C. शिवमंगल सिंह 'सुमन'
   D. गिरिजाकुमार माथुर

9. कनुप्रिया, अन्धा युग तथा ठण्डा लोहा रचना है–
   A. भवानीप्रसाद मिश्र
   B. केदारनाथ अग्रवाल
   C. धर्मवीर भारती

D. गिरिजाकुमार माथुर

10. 'खुशबू के शिलालेख' के लेखक हैं–

A. गिरिजाकुमार माथुर

B. केदारनाथ अग्रवाल

C. शिवमंगल सिंह 'सुमन'

D. भवानीप्रसाद मिश्र

11. युगपथ, लोकायतन तथा चिदम्बरा के लेखक हैं–

A. केदारनाथ सिंह

B. त्रिलोचन

C. सुमित्रानन्दन पन्त

D. अशोक वाजपेयी

रीतिकाल की प्रमुख विशेषताएं -

- ☞ श्रृंगारिकता
- ☞ आलंकारिकता
- ☞ रीति या लक्षण ग्रन्थो का निर्माण
- ☞ आश्रयदाताओं की प्रशंसा/राजप्रशस्ति I
- ☞ चमत्कार प्रदर्शन एवं बहुज्ञता
- ☞ उद्दीपन रूप में प्रकृति का चित्रण
- ☞ ब्रजभाषा की प्रधानता
- ☞ भक्ति और नीति

Gyansindhu Coaching Classes
Join – Whatsapp Channel By Link
Subscribe for Live Class

छायावाद युग की प्रमुख विशेषताएं -

- ☞ वैयक्तिकता की प्रधानता
- ☞ प्रकृति-सौंदर्य और प्रेम की व्यंजना
- ☞ रहस्यवाद
- ☞ लाक्षणिकता
- ☞ प्रकृति का मानवीकरण
- ☞ स्थूल के प्रति सूक्ष्म का विद्रोह

प्रगतिवाद की प्रमुख विशेषताएं -

- शोषकों के प्रति घृणा
- क्रांति की भावना
- मानवतावाद
- प्रयोग वादी युग
- व्यक्तिवाद अति बौद्धिकता
- उपमानों एवं नए प्रतीको का प्रयोग
- सामाजिक जीवन का यथार्थ चित्रण
- राष्ट्रीयता

सप्तको के प्रकाशन वर्ष

1. तारसप्तक 1943 ई.
2. दूसरा सप्तक 1951 ई.
3. तीसरा सप्तक 1959 ई.
4. चौथा सप्तक 1979 ई.

Gyansindhu Coaching Classes | Join – Whatsapp Channel By Link | Subscribe for Live Class

गद्यांश

आज हम इसी निर्मल, शुद्ध, शीतल और स्वस्थ अमृत की तलाश में हैं और हमारी इच्छा, अभिलाषा और प्रयत्न यह है कि वह इन सभी अलग-अलग बहती हुई नदियों में अभी भी उसी तरह बहता रहे और इनको वह अमर तत्त्व देता रहे, जो जमाने के हजारों थपेड़ों को बरदाश्त करता हुआ भी आज हमारे अस्तित्व को कायम रखे हुए है और रखेगा। [801 (DA) 2023]

प्रश्न- (i)उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।

उत्तर- प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक के 'गद्य-खण्ड'के 'भारतीय संस्कृति'नामक पाठ से उद्धृत है। इसके लेखक डॉ० राजेन्द्रप्रसाद हैं।

प्रश्न- (ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उत्तर- रेखांकित अंश की व्याख्या- भारतीय संस्कृति रूपी विशाल सागर में आकर गिरनेवाली जाति, धर्म, भाषारूपी आदि नदियों में एक ही भाव से शुद्ध स्वच्छ, शीतल तथा स्वास्थ्यप्रद भारतीयतारूपी एकता का जल अमृत के समान प्रवाहित होता रहा है। आज यह जल राजनैतिक स्वार्थ, साम्प्रदायिकता, आतंकवाद, धार्मिक, कट्टरता आदि के द्वारा मलिन हो गया है। हमें आज सदियों पहले प्रवाहित उसी अमृत तत्त्व की तलाश है, हमारी हार्दिक इच्छा है कि विभिन्न विचारधाराओं के रूप में इन नदियों में यह अमृतरूपी जल सदैव प्रवहमान् बना रहे, जिससे सभी लोगों में प्रेम और राष्ट्रीयता की भावना का संचार हो। यद्यपि इस देश ने तरह-तरह के संकट झेले हैं, तथापि भारतीय संस्कृति की विभिन्नता में एकता एक ऐसा तत्त्व है, जो आज तक मिटाया नहीं जा सका है।

प्रश्न- (iii)हमारे अस्तित्व को कौन कायम रखे हुए है?

उत्तर- भारतीय संस्कृति का एकता तत्त्व ही वह अमृत है, जो हमारे अस्तित्व को कायम रखे हुए हैं।

प्रश्न- (iv)भारतीय संस्कृतिरूपी विशाल सागर का जल किसके द्वारा मलिन हो गया है?

उत्तर- स्वयं को दूसरे से भिन्न और श्रेष्ठ मानने की हमारी विषमता और अनेकता की भावना के द्वारा भारतीय संस्कृतिरूपी विशाल सागर का जल मलिन हो गया है।

पद्यांश

दिसिकुंजरहु कमठ अहि कोला। धरहु धरनि धरि धीर न डोला।।
राम चहहिं संकर धनु तोरा। होहु सजग सुनि आयसु मोरा।।
चाप समीप रामु जब आए। नर नारिन्ह सुर सुकृत मनाए।।
सब कर संसउ अरु अग्यानू। मंद महीपन्ह कर अभिमानू।।
भृगुपति केरि गरब गरुआई। सुर मुनिबरन्ह केरि कदराई।।
सिय कर सोचु जनक पिछतावा। रानिन्ह कर दारुन दुख दावा।।
संभुचाप बड़ बोहितु पाई। चढ़े जाइ सब संगु बनाई।।
राम बाहुबल सिंधु अपारू। चहत पारु नहिं कोऊ कड़हारू।।

काव्यगत सौंदर्य–रस–वीर, छन्द–चौपाई, अलंकार–रूपक, भाषा–अवधी, गुण–ओज, प्रसाद

1. उपर्युक्त पद्यांश का संदर्भ लिखिए।

उत्तर- उपर्युक्त।

2. रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उत्तर–व्याख्या–**तुलसीदास जी कहते हैं कि इधर जब लक्ष्मणजी ने देखा कि रघुकुलमणि श्रीरामचन्द्रजी ने शिवजी के धनुष की ओर ताका है, तो वे शरीर से पुलकित हो ब्रह्माण्ड को चरणों से दबाकर निम्नलिखित बचन बोले–हे दिग्गजों! हे कच्छप! हे शेष! हे वाराह! धीरज धरकर पृथ्वी को थामें रहो, जिससे यह हिलने न पावे। श्रीरामचन्द्रजी शिवजी के धनुष को तोड़ना चाहते हैं। मेरी आज्ञा सुनकर सब सावधान हो जाओ।**

श्रीरामचन्द्रजी जब धनुष के समीप आये, तब सब स्त्री–पुरुषों ने देवताओं और पुण्यों को स्मरण किया। सबका सन्देह और अज्ञान, नीच राजाओं का अभिमान, परशुरामजी के गर्व की गुरुता,

देवता और रानियों के दारुण दुःख का दावानल, ये सब शिवजी की धनुषरुपी बड़े जहाज को पाकर, समाज बनाकर उस पर जा चढ़े। ये श्रीरामचन्द्रजी की भुजाओं के बलरुपी अपार समुद्र के पार जाना चाहते हैं, परन्तु कोई केवट नहीं ळें

3. ब्रह्माण्ड को चरणों से किसने दबाया?

उत्तर–लक्ष्मण जी ने

4. कड़हारु, बोहितु, शब्दों के अर्थ लिखिए।

उत्तर– **कड़हारु** – केवट, **बोहितु** – जहाज।

Gyansindhu Coaching Classes

Join – Whatsapp Channel By Link

Subscribe for Live Class